उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांकः1428/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनाँकः 01–02–2024

दिनांक : 01 फरवरी, 2024

समय : 12:00 बजे

स्थान : उपकार सभाकक्ष

उपस्थिति : संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की उन्नीसवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियाँ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2024–25 की 19वीं बैठक श्री पियूष कुमार शर्मा, सचिव, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 01 फरवरी, 2024 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक ; नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, अयोध्या के मौसम वैज्ञानिक व धान प्रजनक; चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कानुपर के मौसम वैज्ञानिक एवं गेहूँ प्रजनक; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक, कृषि विभाग; पशुपालन विभाग; मत्स्य विभाग तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के तिलहन वैज्ञानिकों; बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम वैज्ञानिक एवं कीट वैज्ञानिक द्वारा ऑनलाइन प्रतिभाग किया गया।

आगामी सप्ताह (01 फरवरी से 08 फरवरी, 2024) का मौसम पूर्वानुमान

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आगामी सप्ताह (01 फरवरी से 08 फरवरी, 2024) के दौरान प्रदेश के भांवर तराई क्षेत्र, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, दक्षिणी पश्चिमी अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के कुछ हिस्सों में गरज चमक एवं झोंकेदार हवाओं के साथ हल्की से मध्यम जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में कहीं–कहीं हल्की वर्षा होने की संभावना है। इसी क्रम में भांवर तराई क्षेत्र, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, दक्षिणी पश्चिमी अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में दिनांक 01.02.2024 को कहीं कहीं **ओलावृष्टि** होने की भी संभावना है।

इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के भांवर तराई क्षेत्र, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से 2 से 4 डिग्री कम जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से आंशिक रूप से कम रहने की संभावना है। प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 16–18 डिग्री सेल्सियस; पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग एवं भावर तराई क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग में औसत अधिकतम तापमान 18–20 डिग्री सेल्सियस तथा पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग, भावर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग एवं दक्षिण पश्चिमी अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में 20 से 22 डिग्री सेल्सियस; बुंदेलखंड एवं विन्ध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में 24 से 26 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 22–24 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

प्रदेश के उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से आंशिक रूप से कम रहने की संभावना है। प्रदेश के भांवर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत न्यूनतम तापमान 04–06 डिग्री सेल्सियस; पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग, दक्षिण पश्चिमी अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग और भावर तराई क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग में औसत न्यूनतम तापमान 06–08 डिग्री सेल्सियस; प्रदेश के उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के पूर्वी भाग में न्यूनतम तापमान 10–12 डिग्री सेल्सियस; जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 08–10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

द्वितीय सप्ताह (09 फरवरी से 15 फरवरी, 2024) का मौसम दृष्टिकोण

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम दृष्टिकोण के अनुसार द्वितीय सप्ताह (09 फरवरी से 15 फरवरी, 2024) के दौरान प्रदेश में कोई प्रभावी वर्षा होने की संभावना नहीं है।

प्रदेश में अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आस-पास रहने की संभावना है। प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 20-22 डिग्री सेल्सियस, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग एवं दक्षिणी पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, दक्षिणी पश्चिमी अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग, मध्य मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं भांवर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 22-24 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 24-26 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र, विंध्य क्षेत्र, पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग, मध्य मैदानी क्षेत्र एवं भांवर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से 02 से 04 डिग्री सेल्सियस कम जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से कम रहने की संभावना है। प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र, दक्षिण पश्चिमी अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं बुंदेलखंड क्षेत्र एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत न्यूनतम तापमान 06-08 डिग्री सेल्सियस; जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में न्यूनतम तापमान में 08-10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले दो सप्ताह हेतु कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- आलू में पछेती झुलसा के लिये मौसम अनुकूल है अतः प्रकोप होने पर संस्तुति अनुसार उपचार करें।
- तिलहनी फसलों में माहूं का प्रकोप होने पर संस्तुति अनुसार उपचार करें।
- टमाटर तथा मिर्च में झुलसा रोग से बचाव हेत संस्तुति अनुसार उपचार करें।
- सरसों में अल्टरनेरिया ब्लाइट, तना सड़न रोग की रोकथाम के लिये डाईथेन एम-45, 2 ग्रा. प्रति लीटर अथवा कार्बेन्डाजिम+डीएम-45, 2 ग्रा. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें तथा 10 से 15 दिन उपरांत इसका पुनः छिड़काव करें।
- सरसों में सफेद रतुआ के रोकथाम के लिये मेटालेक्जिल+मैंकोजेब 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें तथा 10 से 15 दिन उपरांत इसका पुनः छिड़काव करें।
- पाऊडरी मिल्डयू रोग की रोकथाम हेतु डाइनोकैप+ट्राइडीमार्फ 1 मि.ली. को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें तथा 10 से 15 दिन उपरांत इसका पुनः छिड़काव करें।
- प्याज को पर्पिल ब्लाच रोग का प्रकोप होने पर जिनेब या मैंकोजेब 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें।
- पशुओं में सभी तरह के रोगों का टीकाकरण विभाग द्वारा मुफ्त कराया जा रहा है पशुपालक निःशुल्क टीकाकरण अवश्य करायें।

गेहूँ की खेती

- कल्ले निकलते समय गेहूँ की दूसरी सिंचाई तथा गाठें बनते समय तीसरी सिंचाई करें।
- गेहूंसा एवं जंगली जई के नियंत्रण हेतु फिनोक्साप्राप-पी-इथाइल 10 प्रतिशत ई.सी. की 1 लीटर प्रति हे. अथवा क्लोडीनाफॉप प्रोपैरजिल 15 प्रतिशत डब्लू.पी. की 400 ग्रा. प्रति हे. मात्रा को लगभग 500 से 600 पानी में घोलकर अथवा सल्फोसल्फ्यूरान 75 प्रतिशत डब्लू.जी. की 33 ग्रा. (2.5 यूनिट) 300 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. फ्लैटफैननाजिल से बुवाई के 30 से 35 दिन बाद फ्लैटफैननाजिल से छिड़काव करें।
- सकरी एवं चौड़ी पत्ती दोनो प्रकार के खरपतवारों के एक साथ नियंत्रण हेतु सल्फोसल्फ्यूरान 75 प्रतिशत की 33 ग्रा0/हे0 +मेटसल्फ्यूरान इथाइल 20 प्रतिशत डब्लू.पी. की 20 ग्रा. प्रति हे. मात्रा को लगभग 500-600 ली0 पानी में घोलकर बुआई के 30-35 दिन बाद फ्लैटफैननाजिल से छिड़काव करें।
- गेरूई एवं पत्ती धब्बा रोग के नियंत्रण हेतु थायोफिनेट मिथाइल 70 प्रतिशत डब्लू. पी. की 700 ग्राम अथवा जीरम 80 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.0 कि.ग्रा. अथवा मैकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू. पी. की 2 कि.ग्रा. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू. पी. की 2 कि.ग्रा. प्रति हे. लगभग 750 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- गेरूई के नियंत्रण हेतु प्रोपीकोनाजोल 25 प्रतिशत ई.सी. की 500 मिली. प्रति हेक्टेयर लगभग 750 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।

तिलहनी फसलों की खेती

- सरसों की फसल में अल्टरनेरिया, पत्ती धब्बा, सफेद गेरूई एवं तुलसिता रोग के नियन्त्रण हेतु मैंकोजेब 75 डब्लू.पी. की 2.0 कि.ग्रा. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा अथवा जिरम 80 प्रतिशत डब्लू पी की 2.0 किग्रा. अथवा कापर आक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्लू.पी. की 3.0 किग्रा. मात्रा प्रति हे. लगभग 600–750. लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- सरसों में माहू या चेंपा का प्रकोप होने पर शुरूआती आक्रमण के समय माहू युक्त टहनियों को तोड़कर नष्ट करते रहें तथा अधिक प्रकोप होने पर रासायनिक उपचार के लिये डाईमिथोएट 30 ई.सी. का 1 मिली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें तथा अधिक प्रकोप की स्थिति में 15 दिन अंतराल पर पुनः छिड़काव करें।
- किसान भाई अपने खेतों की निरंतर निगरानी करते रहे सफेद रतुआ रोग के लक्षण दिखने पर 600 से 800 ग्राम मैंकोजेब (डाईथेन एम45) का 250 से 300 लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अंतराल पर 2 से 3 बार छिड़काव करें।

दलहनी फसलों की खेती

- चना व मटर में फली छेदक एवं सेमीलूपर कीटों की रोकथाम के लिए मृत 250 सूँड़ियों का रस 200 से 300 ली. पानी में मिलाकर 0.5 प्रतिशत गुड़ के साथ प्रति 1 सूँडी प्रति 10 पौध दिखाई पड़ने पर छिड़काव करना चाहिए अथवा फूल आने पर यदि प्रकोप दिखाई दे तो बेसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी.टी.) की कार्स्टकी प्रजाति 1.0 किग्रा. अथवा एजाडिरैक्टिन 0.03 प्रतिशत डब्लू.एस.पी. 2.5–3.0 किग्रा. अथवा एन.पी.वी. ऑफ हेल्कोवरपा आर्मीजेरा 2 प्रतिशत ए.एस. 250–300 मिली. अथवा 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- मटर में अल्टरनेरिया, पत्ती धब्बा एवं तुलासिता रोग के नियंत्रण हेतु मैंकोजेब 75 डब्लू.पी. की 2 किग्रा. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2 किग्रा. अथवा कॉपर आक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्लू.पी. की 3 किग्रा. मात्रा प्रति हे. लगभग 500–600 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।
- मटर में बुकनी रोग के नियंत्रण हेतु घुलनशील गंधक 80 प्रतिशत 2 कि.ग्रा. अथवा ट्राईडेमेफॉन 25 प्रतिशत डब्लू.पी. 250 ग्राम प्रति हेक्टेयर लगभग 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें

जायद फसलों की खेती

- उर्द की बसंतकालीन प्रजाति नरेन्द्र उर्द–1 की बुवाई फरवरी में कर लें।
- मक्का की संकुल किस्मों यथा नवीन, नवजोत, कंचन, श्वेता, आजाद उत्तम, गौरव, प्रताप कंचन–2 तथा संकर किस्मों यथा पूसा अगेती संकर मक्का–2, जे.एच.–3459, मालवीय संकर मक्का–2, एन.एम.एच. 920, 803, एल.जी.–32–81, सी.ओ.एच.(एम)–8, पी.ए.सी.–751, डक्कन–115 तथा पी.ए.सी.–740 व हरे भुट्टे के लिये संकुल किस्मों यथा माधुरी, प्रिया, विन आरेंज तथा शिशु मक्का की किस्मों आजाद कमल, प्रकाश पूसा संकर अगेती मक्का–2, एच.एम.–4 की बुवाई करें।
- जेठी सावां की भावना व एम.डी.यू.–1 किस्मों की बुवाई 15 फरवरी से करें।

गन्ना की खेती

- शरदकालीन बावग गन्ने में सिंचाई कर 60 किग्रा नत्रजन प्रति हे0 (132 किग्रा यूरिया) की पहली टाप ड्रेसिंग करें।शरदकालीन व बसन्त कालीन शीघ्र पकने वाली प्रजातियों की कटाई यदि शेष रह गई हो तो कटाई करें एवं उसकी पेड़ी रखने हेतु तत्काल मेंड़ों को गिराते हुए ठूंठों की छंटाई करें। सिंचाई उपरान्त ओट आने पर पंक्तियों के दोनो तरफ से गुड़ाई करें तथा उस समय 200 किग्रा यूरिया प्रति हेक्टेअर लाइनों में डाल दें। अवशेष कीटों को मारने के लिए क्लोरोपाइरीफॉस 20 प्रतिशत घोल 5 ली0 प्रति/हे0 1875 ली0 पानी में घोल बनाकर हजारे द्वारा दो पंक्तियों के बीज प्रयोग करें इसके ऊपर सूखी पत्तियों को समान रूप से दो पंक्तियों के मध्य फैला दें।
- मध्य क्षेत्र, पश्चिमी क्षेत्र में बुआई का समय 15 फरवरी के उपरान्त आता है अतः शीघ्र पकने वाली प्रजातियों की बुआई हेतु को.शा. 95255, को.से. 96268, को.से. 03234, सी.ओ.–0118, को.लख.–14201, को.लख. –11203, को.–15023 में से उपलब्धतानुसार प्रजातियों का चयन करें।
- फरवरी माह में बुआई करने की दशा में मूंग अंतः फसल की बुआई करें, इस समय भिंडी की अंतः खेती करना लाभकारी होगा।

सब्जियों की खेती

- प्याज को पर्पिल ब्लाच रोग का प्रकोप होने पर जिनेब या मैंकोजेब 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें।
- आलू में पछेती झुलसा बीमारी की रोकथाम हेतु मैंकोजेब/प्रोपीनेब/क्लोरोथेलोंनिल युक्त फफूँदीनाशी का रोग सुग्राही किस्मों पर 0.2–0.25 प्रतिशत की दर से अर्थात 2.0–2.5 कि.ग्रा. दवा 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. छिड़काव करें साथ ही साथ यह भी सलाह दी जाती है कि जिन खेतों में बीमारी प्रकट हो चुकी हो उसमें किसी भी फफूंदनाशक–साइमोक्सेनिल 8 प्रतिशत+ मैंकोजेब 64 प्रतिशत डब्लू.पी. का 3 कि.ग्रा. 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. छिड़काव करें।
- टमाटर तथा मिर्च में झुलसा रोग से बचाव हेतु मैंकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2 कि.ग्रा. मात्रा प्रति हे. 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

बागवानी

- आम में तनाबेधक कीटों के नियंत्रण हेतु छिद्रों को साफ करके 0.05 प्रतिशत डाइक्लोरोवास का घोल छिद्रों में भरकर बंद कर दें।
- आम के भुनगा कीट के रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस सी (0.3 मि.ली. प्रति लीटर) एवं प्रोफेनोफॉस 50 प्रतिशत ई.सी. (01 मिली. प्रति लीटर) पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आम में खर्रा रोग से बचाव हेतु घुलनशील गंधक 2 प्रतिशत तथा 1 सप्ताह बाद डाइनोकैप अथवा ड्राइडेमार्फ 0. 1 प्रतिशत (1 मिली. प्रति लीटर पानी में) का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- केले में माहू का प्रकोप दिखाई पड़ने पर मोनोक्रोटोफॉस 1.25 मिली./ली. पानी का छिड़काव करें।
- गुजिया (मिली बग) के उपचार के लिये आम के तने के चारों ओर गहरी जुताई करें। तने पर 400 गेज की पालीथीन की 25 सेमी. चौड़ी पट्टी बॉधे और पट्टी के ऊपरी तथा निचले किनारों को सुतली से बॉधकर निचले सिरे पर ग्रीस लगाकर सील कर दें। 2 प्रतिशत मिथाइल पैराथियान चूर्ण (200 ग्राम/पेड़) तने के चारों ओर बुरक दें। यदि कीट पेड़ पर चढ़ गये हों तो 0.04 प्रतिशत मोनोक्रोटोफॉस (1 मिली./लीटर पानी) या डाइमेथोएट 0.06 प्रतिशत (02 मिली./ली. पानी) का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।

पशुपालन

- बरसीम अधिक खिलाने से पशुओं को अफरा हो सकता है, अफरे से बचाव के लिये बरसीम के साथ सूखा चारा मिलाकर खिलायें।
- वर्तमान मौसम को देखते हुए पशुओं को ठंड से बचाने के लिए सुबह–शाम पशुओं पर झूल डालें तथा रात में पशुओं को अन्दर पशुघर में बॉधें।
- पशुबाड़े में बिछावन के रूप में पुआल/गन्ने की सूखी पत्तियों का प्रयोग करें।
- मुर्गियों के बिछावन को सूखा रखें तथा दो दिन के पश्चात बदलें।
- खुरपका एवं मुंहपका बीमारी (एफ.एम.डी.) का टीकाकरण कराया जा रहा है, यह सुविधा पशुचिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- पशुओं को संतुलित आहार के साथ खनिज मिश्रण अवश्य खिलायें एवं नमक तथा गुड़ का घोल बनाकर खिलायें।
- दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिये पूरा दूध निकाले और दूध दोहन के बाद थनों को कीटाणुनाशक घोल में डुबायें।
- बचा हुआ बासी खाना पशुओं को न खिलायें।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वारा पर पशु चिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु पशुपालक टोल फ्री हैल्पलाइन नं. 1962 पर सम्पर्क करें।

मत्स्य पालन

- तालाब में सिंचित मत्स्य बीज के पोषण हेतु रासायनिक उर्वरकों को मासिक रूप से 74 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर (सुपरफास्ट–25 कि.ग्रा., यूरिया–45 कि.ग्रा., म्यूरेट ऑफ पोटाश 04 कि.ग्रा.) की दर से प्रयोग करें।
- तालाबों का जल स्तर 5 से 5.5 फुट तक बनाये रखा जाय।

- कॉमन कार्प मछलियों के प्रजनन के दृष्टिगत फरवरी माह में प्रजनकों (ब्रूडर) का पृथककरण करे दें एवं उनका विशेष पोषण प्रारंभ कर दें।
- मछलियों को निश्चित समय पर भोजन दें। मछलियों में वृद्धि हेतु पूरक आहार का प्रयोग मछलियों के वजन के 1 से 2 प्रतिशत तक किया जाय।

रेशम पालन

- प्रदेश में एरी कीट पालन माह फरवरी के प्रथम सप्ताह में तथा शहतूती कीट पालन दिनांक 20.02.2024 से प्रारंभ होने जा रहा है इस हेतु किसानों/कीटपालकों को यह सुझाव दिया जाता है कि वह कीटपालन गृह एवं कीटपालन उपकरणों को अच्छी प्रकार से 1 प्रतिशत सैनीटेक (क्लोरीन डाई आक्साईड) से या 2 प्रतिशत फार्मेलीन के घोल से तथा 40 कि.ग्रा. चूना एवं 200 ग्रा. ब्लीचिंग पाऊडर से 03 चक्रों में विशुद्धीकरण करायें तथा कीटपालन के समय तापमान एवं आर्द्रता का विशेष ध्यान रखें।

वानिकी

- पॉपलर की कटिंग क्यारियों में लगा दें। बकैन जैसे पतझड़ी पौधों का रोपण कर दें।
- यूकेलिप्टस पौध को अंकुरण कक्ष से छाया कक्ष में स्थानान्तरित कर दें।
- सिरस, खैर, आंवला, सागौन, बकैन, अकेशिया–आरक्यूलीफार्मिस व अमलतास के बीज स्थानीय रूप से एकत्र कर लें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 15 फरवरी, 2023 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध है।

02/02/24

(पियूष कुमार शर्मा)
सचिव

<u>प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।</u>

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र.।
16. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
17. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
18. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।

19. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
20. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
21. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
22. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
23. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
24. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
25. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
26. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
28. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
29. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
30. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
31. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
32. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
33. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
34. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
35. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
36. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
37. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
40. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
41. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
42. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
43. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
44. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
45. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
46. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

2-2-24

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2023–24 की उन्नीसवीं बैठक दिनांक 01 फरवरी, 2024 की उपस्थिति

1. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ
2. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ
3. श्री ए.के. बिश्नोई, संयुक्त कृषि निदेशक, धान्य फसलें, कृषि विभाग, उ.प्र.
4. श्री अनिल सागर, उपनिदेशक (कृषि रक्षा), कृषि विभाग, लखनऊ
5. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ (ऑनलाइन)
6. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उपकार, लखनऊ
7. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या
8. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ
9. श्री ए. के. शुक्ला, सहायक निदेशक, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश
10. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या
11. डा. सोमवीर सिंह, व्हीट ब्रीडर, सेक्शन ऑफ रबी सीरियल, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर
12. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर
13. डा. समीर कुमार विश्वास, विभागाध्यक्ष, पादप रोग विज्ञान विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर
14. डा. अनिल दीक्षित, संयुक्त निदेशक, पशुपालन, उत्तर प्रदेश
15. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आबजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)
16. डा. सुरेन्द्र कुमार सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (कीट विज्ञान विभाग), बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)
17. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी
18. डा. प्रवीन चरन, टेक्नीकल आफीसर, जी.के.एम.एस. परियोजना, नैनी एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट शुआट्स, प्रयागराज
19. श्री सुमित कुमार, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ